कर्फ़्यू

मनोज

लेखक के बारे में

एक डॉक्टर, **मनोज** ने रेडियो और पत्रिकाओं के लिए पचास से ज़्यादा कहानियाँ लिखी हैं। उनमें से तीस प्रकाशित हुई हैं और उनका अनुवाद भी किया गया है।

कफ़र्यूँ

मनोज

की डोगरी कहानी पर आधारित
कथा द्वारा संक्षिप्त अनुवाद

सीरीज़ संपादिकाः गीता धर्मराजन

KATHA

प्रथम हिन्दी संस्करण 2008, दूसरा संस्करण 2010
तीसरा संस्करण 2010
कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
न्युटेक फोटोलिथेग्राफर्स, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-87649-79-3
कवर चित्राँकन एवं डिज़ाइनः गरिमा गुप्ता
चित्राँकनः एम डी हुसैन एवं दिलिप कुमार मंडल

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलनेवाली खुशी को बढ़ावा देना।

ए 3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 4182 9998, 2652 4511
फैक्सः 2651 4373
ई मेलः kathakaar@katha.org, इंटरनेटः http://www.katha.org

1

सीमा सुरक्षा बल की एक छोटी-सी टुकड़ी अभी कुछ दिन पहले छह महीनों की बॉर्डर ड्यूटी करके श्रीनगर आई थी।

वहाँ के हालात को देखते हुए, सभी जानते थे कि शहर की ड्यूटी भी कम मुसीबतों से भरी नहीं होती। पर ऐसी ड्यूटी पहाड़ी सीमाओं पर लगी ड्यूटियों जैसे नीरस या अकेलेपन से भरी नहीं होती।

शहर में काफ़ी हलचल रहती है। आप लोगों को अपने काम पर जाते, स्त्री-पुरुषों को ख़रीदारी करते, बच्चों को गलियों में

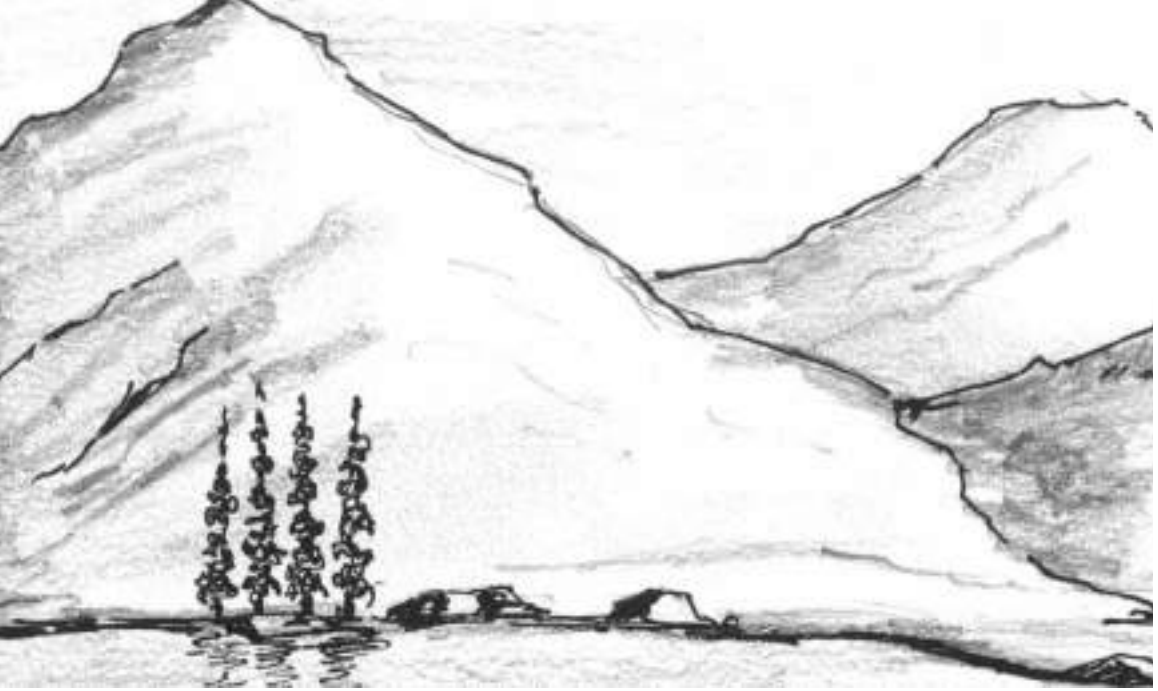

खेलते, मोटर साइकिलों, स्कूटरों, ताँगों को सड़कों पर दौड़ते और खुली दुकानों को देख सकते हैं।

यहाँ ज़िन्दगी एक ढर्रे पर संयत रूप से चलती रहती है, मानो कुछ भी नहीं हुआ हो।

पर लोगों को पता है कि यह सिर्फ़ ऊपरी तौर पर है। कुछ बहुत डरावना, बहुत आवांछित, अन्दर ही अन्दर सुलगता रहता है।

जैसे पिघला हुआ लावा जो अचानक फट पड़ता है और अपने साथ बहुत से लोगों को शिकार बनाता हुआ, फिर से दब जाता है। इसीलिए इस शहर में बमों का फटना, गोली चलना, आगजनी, हत्या आदि के साथ कर्फ़्यू होना भी एक आम बात हो गई है।

ढर्राः रोज़ का नियम
आवांछितः अनचाहा
आगजनीः आग लगाना

2

इस सीमा सुरक्षा बल को अभी इस शहर में आए आठ-दस दिन ही हुए थे कि कर्फ़्यू लागू हो गया। वे केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल के साथ मिलकर पूरे शहर में गश्त लगा रहे थे।

कुछ जवान अपनी-अपनी चौकी पर चौकन्ने बैठे थे।

हवलदार रामप्रसाद और दो सिपाही, शिवराम और काली यादव निचले बाज़ार की गली में गश्त पर थे।

उन्होंने कुछ रेत की बोरियाँ लगाकर एक पेड़ के नीचे पहरा बिठाया था।

जहाँ एक ओर मुख्य दल बीच-बीच में शहर के चक्कर लगा रहा था, इन तीनों ने अपने ही ढंग की गश्त योजना बनाई। एक को पहरे के मुख्य स्थान की सुरक्षा के लिए छोड़कर, जहाँ गोला-बारूद आदि

तैयार रखे गए थे, अन्य दो जवान गली में चक्कर लगाने लगे।

गली मुश्किल से आठ-दस फुट चौड़ी थी। गली के दोनों ओर बहुमंज़िले पक्के मकान थे। कुछ घरों में बाहर से ताला लगा था। उनमें रहने वाले बहुत समय पहले सब छोड़कर न जाने कहाँ चले गए थे।

3

हाँ, कर्फ़्यू बहुत ध्यान से लागू किया जा रहा था। किसी भी व्यक्ति के घर से बाहर निकलने का प्रश्न ही नहीं उठता था। किसी ने भी खिड़की से झाँकने तक की हिम्मत नहीं की।

सभी खिड़कियाँ और दरवाज़े बन्द थे। बच्चों की आवाज़ों के सिवा, बाकी सभी आवाज़ें दबी, दबी-सी थीं।

अचानक, दूर से गोलियों की आवाज़ सुनाई दी। हवलदार रामप्रसाद और उसके साथी फ़ौरन् सतर्क हो गए।

उनके हाथ अपने हथियारों पर कस गए। कुछ देर बाद, गोलियाँ चलनी बन्द हो गईं। उनके पीछे दूर कहीं धुएँ का बादल उठने लगा, शायद कहीं आग लगी थी। पूरे शहर में दहशत फैल गई।

दोपहर के एक बजे थे। सीमा सुरक्षा बल की एक गाड़ी उस गली के कोने पर आ कर रुकी।

गाड़ी उन जवानों के लिए खाना और पानी लेकर आई थी। तीनों जवान एक-एक करके खाना लेने के लिए गाड़ी तक गए।

सूरज काफ़ी तेज़ था, इसलिए वे पहरेवाले मोर्चे पर पेड़ के नीचे एक साथ खड़े हो गए।

"तुम लोग खाना खा लो, तब तक मैं पहरा देता हूँ," रामप्रसाद ने अपने दोनों सिपाहियों से कहा, और वह अपनी बन्दूक रेत की बोरी पर टिकाकर निशाना साधकर बैठ गया। दोनों सिपाही उन रेत की बोरियों के पीछे बैठ गए और खाना खाने लगे।

"ऐसा लग रहा है कि इस शहर के लोगों को कर्फ़्यू की काफ़ी आदत है। कहीं पर भी कोई खलबली नहीं है," यादव खाते-खाते बोला।

"ठीक कह रहे हो। जिस कम्पनी की जगह हम लोग गश्त पर आए हैं, वे भी कह रहे थे कि यहाँ का हर परिवार अपने घर पन्द्रह-बीस दिनों का रसद रखता है," शिवराम ने जवाब दिया।

रामप्रसाद जो खड़ा था, उनकी ओर मुड़कर बोला, "जहाँ तक कर्फ़्यू का सवाल है, यहाँ के लोग हम लोगों से ज़्यादा सभ्य हैं।"

तीनों ज़ोर से हँसने लगे। फिर हवलदार रामप्रसाद उन दोनों सिपाहियों को समझाने लगाः

रसदः राशन

"देखो, सिपाहियों को कर्फ़्यू के समय काफ़ी सख़्त होना चाहिए। तुम्हें किसी से बात नहीं करनी चाहिए। थोड़ी-सी भी ढील छोड़नी बहुत महँगी पड़ सकती है। इसलिए किसी भी स्थिति में नरमी नहीं बरती जानी चाहिए, चाहे कोई कितनी भी मिन्नतें करे।

यदि कोई गंभीर रूप से बीमार हो तो चौराहेवाली चौकी पर वायरलेस से संदेश भेजो। फिर उनके एंब्यूलेंस भेजने का इंतज़ार करो। समझे?"

शिवराम और यादव ने "हाँ" में अपनी गर्दन हिलाई और खाना खाते रहे।

4

रात का समय था। लगभग आठ बजे थे। गली में सिर्फ़ तीन बिजली के खम्बों पर रोशनी थी। उनकी रोशनी देखने भर के लिए काफ़ी थी।

घरों में भी बत्ती जल रही थी – खिड़कियों और रोशनदानों के दरारों से रोशनी की किरणें गली तक पहुँच रही थीं। रामप्रसाद गश्त की चौकी पर तैनात था। शिवराम और यादव गली के एक कोने से दूसरे कोने तक चक्कर काट रहे थे।

गश्त लगाते-लगाते वे गली के आख़िरी छोर पर पहुँचे।

कोनेवाले घर की खिड़कियों में से एक नीचेवाली खिड़की थोड़ी-सी खुली थी। उसमें से कोई फ़िल्मी गीत सुनाई दे रहा था।

शिवराम ने खिड़की से झाँका। अन्दर कुछ लोग टेलिविज़न पर चित्रहार देख रहे थे। उसने यादव को इशारा किया, और यादव भी दबे पाँव खिड़की के पास आकर खड़ा हो गया और गाना देखने लगा।

दोनों वहाँ छह या सात मिनट तक खड़े रहे, टेलिविज़न के परदे पर बदलती हुई तस्वीरों को देखते रहे। इतने में हवलदार रामप्रसाद ने पुकारा, "क्या बात है? तुम आ नहीं रहे?"

चौंककर दोनों सिपाही सीधे खड़े हुए और फ़ौरन् चौकी वापस लौट आए। तीन अन्य जवान उनकी जगह रात की गश्त के लिए आ गए थे।

कर्फ़्यू का दूसरा दिन था। रामप्रसाद और उसके दो सिपाही उसी गली में तैनात थे। अभी दिन के केवल ग्यारह बजे थे पर धूप काफ़ी तेज़ थी। पेड़ के नीचे स्थित अपनी चौकी में खड़े वे तीनों पानी पी रहे थे। तभी दूर से गोली चलने की आवाज़ ने उन्हें सतर्क कर दिया और वे झट अपनी-अपनी जगह बंदूकें संभाल कर बैठ गए।

कुछ देर बाद, बंदूकें चलनी बंद हो गई और चारों ओर सन्नाटा छा गया। उन दो सिपाहियों को चौकी पर छोड़कर, रामप्रसाद ने फिर गली में गश्त लगाना शुरू कर दिया।

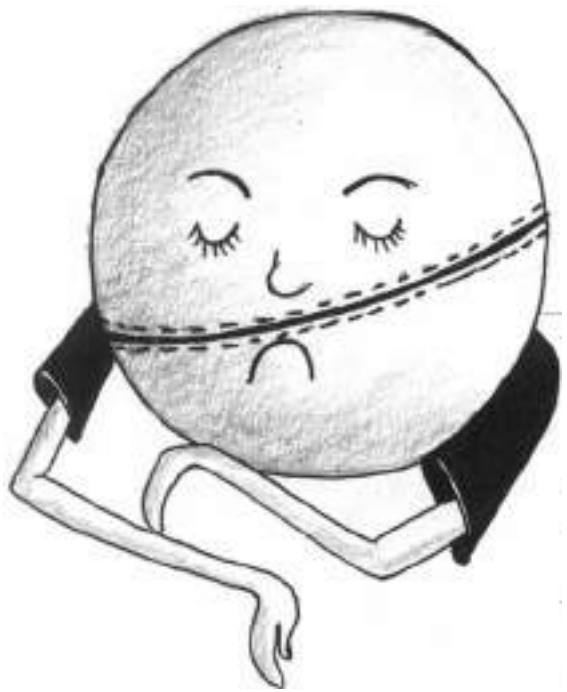

5

खाटुक-टुक-टुक ... अरे ये क्या! रामप्रसाद तेज़ी से घूमा और आवाज़ की दिशा में देखने लगा।

एक मध्यम आकार की गेंद उछलती हुई गली के किनारे लगी नाली की ओर लुढ़क आई। उसके साथ ही एक छोटे बच्चे की चिल्लाहट सुनाई दी। रामप्रसाद ने देखा कि कोने वाले घर की निचली खिड़की का कपाट खुला था।

कपाटः दरवाज़ा

करीब दो-ढाई साल का बच्चा रोता हुआ गेंद की ओर लपक रहा था। एक स्त्री उसे कुछ कह रही थी और पीछे खींच रही थी। परन्तु बच्चा खिड़की की सीखचें नहीं छोड़ रहा था।

वे तीनों सिपाही बिहार के थे। वे यहाँ की स्थानीय भाषा नहीं समझते थे, फिर भी वे जान गए कि बच्चा क्या चाहता है।

रामप्रसाद ने आगे बढ़कर गेंद उठा ली। रोना बन्द कर, बच्चा रामप्रसाद की ओर देखने लगा।

वह औरत, जो शायद लड़के की माँ थी, उसे छोड़कर ओट में हो गई। रामप्रसाद के चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कान फिरी। वह हाथ में गेंद लिए खिड़की तक गया और उस छोटे से लड़के की ओर गेंद बढ़ा दी।

लड़के ने खिड़की के सीखचों से हाथ झट बाहर निकाला और गेंद पकड़ ली।

सीखचें: लोहे की छोटी सलाखें

उसने अपनी माँ से कुछ कहा, जो उसके पीछे ही खड़ी थी।

माँ ने उसे अपनी कमर पर उठा लिया और खिड़की बन्द कर दी। रामप्रसाद अपनी चौकी की ओर मुड़ गया, जहाँ पर शिवराम और यादव खड़े थे। उसके चेहरे पर अब भी मुस्कान थी।

शाम होने वाली थी। रामप्रसाद अपनी चौकी के सामने खड़ा ऊपर की ओर देख रहा था। अचानक उसकी नज़र उसी मकान की पहली मंज़िल की खुली खिड़की पर पड़ी। उसने उसी दो-ढाई साल के लड़के को देखा। वह खिड़की के पीछे हाथ में गेंद लिए खड़ा था।

रामप्रसाद ने मुस्कुराकर हाथ हिलाया। लड़के ने भी हाथ हिलाकर जवाब दिया।

फिर बच्चे ने गेंद रामप्रसाद की ओर उछाल दी। इस बार वह रोया नहीं। शायद वह घर में बंद रहने से ऊब गया था। वह खेलना चाहता था।

गेंद गली में आ गिरी तो शिवराम और यादव भी हँस पड़े। इस बार रामप्रसाद ने गेंद उठाई, ध्यान से निशाना लगाया और पहली मंज़िल की खिड़की की ओर उछाल दी। बच्चा खिलखिलाकर हँस पड़ा।

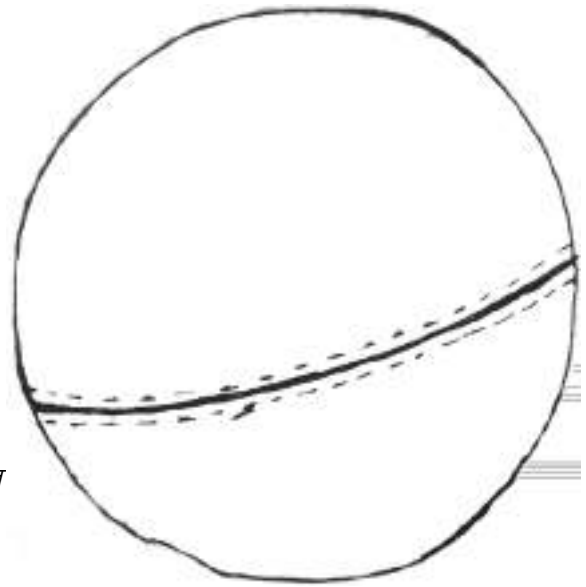

गली के दूसरी ओर एक दरवाज़ा खुला। हाथ में बर्तन पकड़े अधेड़ उम्र का एक आदमी बाहर निकला।

यादव उसकी ओर बढ़ा, हिन्दी में उससे कुछ बात की और फिर रामप्रसाद की ओर बढ़ गया।

वह आदमी सामने वाले घर जाना चाहता था जहाँ एक बहुत ग़रीब परिवार रहता था।

वह उन्हें चावल भरा बर्तन देना चाहता था। क्या वह दे सकता है?

रामप्रसाद ने थोड़ी देर सोचा, फिर अपना फ़ैसला सुनाया।

"कर्फ़्यू का पूरी दृढ़ता से पालन किया जाएगा और कोई भी अपने घर से बाहर कदम नहीं रखेगा। इसलिए, यादव उस आदमी से चावल का बर्तन लेकर सामने वाले घर पहुँचा देगा।"

इसी बीच, गश्त पर निकला शिवराम कोने वाले घर की खिड़की के पास आकर रुक गया।

टी. वी. पर कोई फ़िल्म चल रही थी। भूल से या फिर जानबूझकर, घर के लोगों ने एक खिड़की खुली छोड़ दी थी। शिवराम उस खिड़की के बाहर दीवार के सहारे खड़ा अन्दर चल रही फ़िल्म देखने लगा।

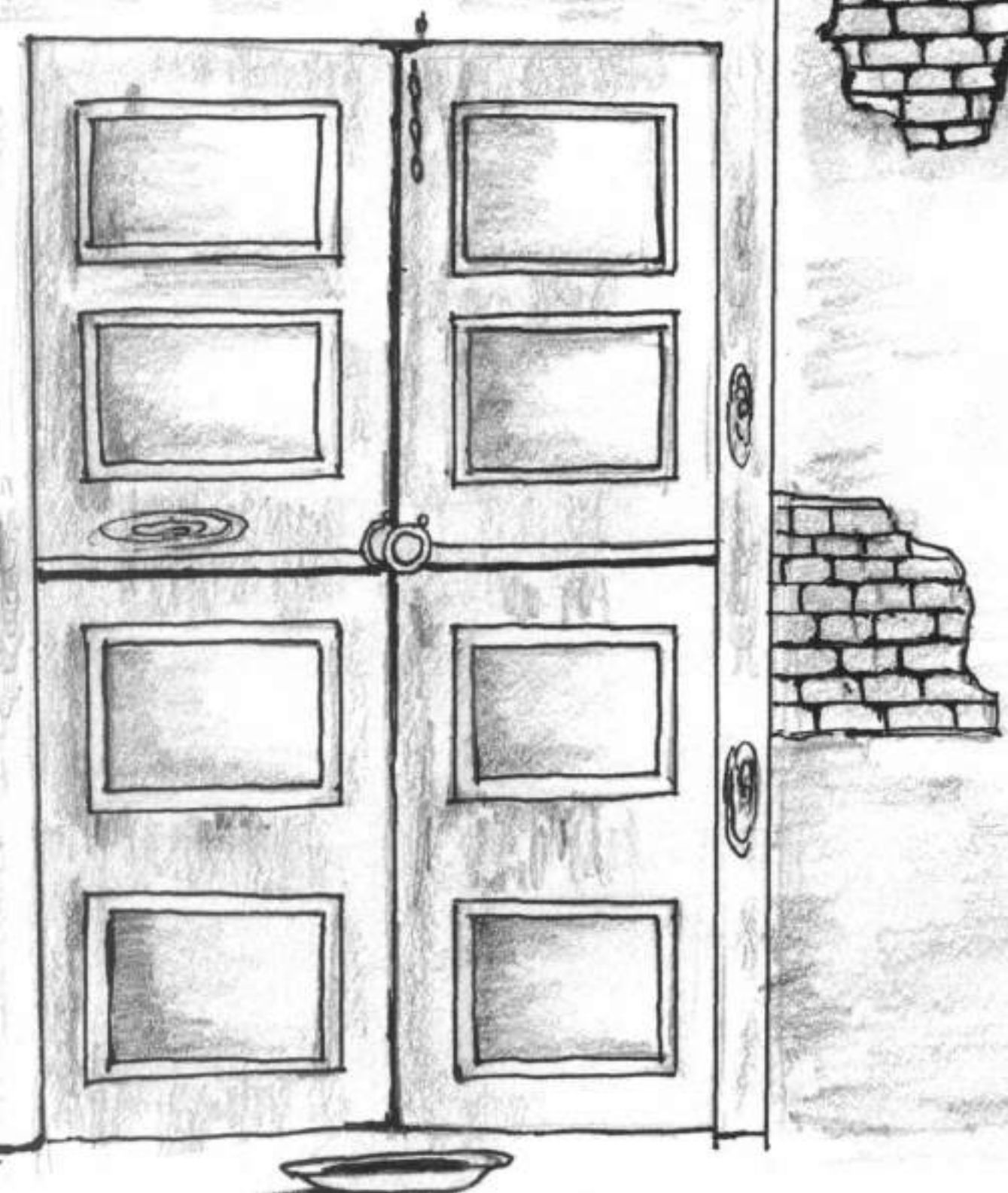

6

दूसरी ओर, खिड़की पर खड़े बच्चे ने फिर प्लास्टिक की गेंद रामप्रसाद की ओर लुढ़का दी। रामप्रसाद उसे फिर से खिड़की में फेंकने की कोशिश करने लगा। पर हर बार, गेंद या तो खिड़की के सीखचों से टकरा जाती या फिर दीवार से लगकर वापस गली में गिर जाती।

किस्मत अपना ही खेल खेलती है। कम्पनी कमांडर ने भी मुआयना करने का वही वक्त चुना। वे चुपचाप गली के दूसरे सिरे पर खड़े-खड़े उन्हें देखने लगे।

अब तक जवानों ने उन्हें नहीं देखा था।

उनकी उपस्थिति का तभी आभास हुआ जब वे चिल्लाकर बोले, "ये सब क्या चल रहा है यहाँ?"

वे तीनों जहाँ थे वहीं जम गए। यादव अपने हाथ में चावल का ख़ाली बर्तन लिए, रामप्रसाद प्लास्टिक की गेंद पकड़े, और दूसरे सिरे पर दीवार का सहारा लिए शिवराम। तीनों की बंदूकें उनके कंधों पर लटकी थीं। गश्त चौकी ख़ाली पड़ी थी।

ऑफ़िसर उन पर ज़ोर से चिल्लाने लगे और उन्हें डाँटने लगे, पर जब सज़ा देने का समय आया तो हल्के पड़ गए।

उन्हें रात की गश्त पर भी तैनात रहना था। "अब ठीक से काम करना, समझे!" कमांडर ने उन्हें चेतावनी दी।

जब ऑफ़िसर चले गए, रामप्रसाद ने पीछेवाली खिड़की की ओर देखा जहाँ पहले वह बच्चा गेंद लिए खड़ा था। वह अब कसकर बंद थी। उसने अपने हाथ में पकड़ी गेंद ज़मीन पर फेंक दी। धीरे-धीरे वह नाली की ओर लुढ़क गई।

यादव ने चावल का ख़ाली बर्तन उसके मालिक के दरवाज़े पर पटक दिया और हिन्दी में चिल्लाया, “कोई भी गली में आमने-सामने के पड़ोसियों के घर कुछ भी भेजने की कोशिश न करे!”

शिवराम ने अपने गुस्से को शान्त किया। कोनेवाले घर की खिड़की पर अपनी बंदूक से खटखटाया और आदेश दियाः “सभी नागरिक खिड़कियाँ पूरी तरह बन्द रखें। रेडियो और टेलिविज़न की आवाज़ बिल्कुल हल्की रखें। हमारे काम में बिल्कुल बाधा नहीं आनी चाहिए! कफ़्र्यू चल रहा है ... कफ़्र्यू में कोई लापरवाही नहीं बरती जाएगी!”

आओ बूझें

हमारे देश की सेवा
कौन-कौन करता है?
चित्र बनाओ सबको समझाओ
उनकी कोई कहानी सुनाओ

सै	छ	ज	स	झ	ता
च	नि	म	मा	ने	ल
क	घ	क	ज	त	प
ख	ग	ज	से	व	क
शि	क्ष	क	फ	न	य

आप क्या बनना चाहोगे?

कहानी में बच्चा बार-बार गेंद खिड़की से बाहर क्यों उछाल रहा है?

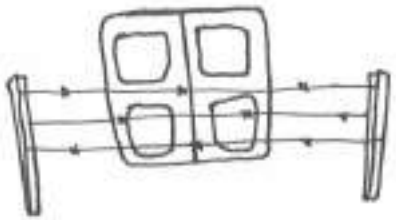

देखो शब्दों की चतुराई
बात समझ में अब है आई।
लिखना है इनका उल्टा शब्द।
लाना है एक सुन्दर शब्द।

आप भी कहानी में से ऐसे शब्द खोजें और उन्हें इन बादलों में लिखें।

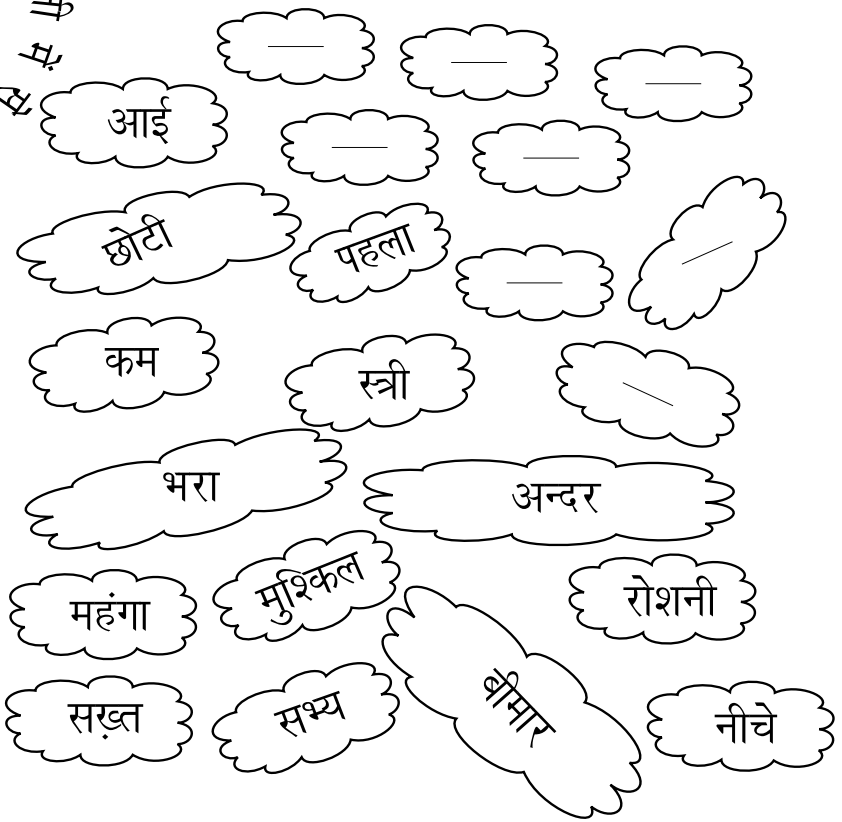

कहानी में बहुत सारे उर्दू शब्द हैं। उनके अर्थों को खोजें और अपनी कॉपी में लिखें।

बताओ तो जानें!

इस सैनिक की वर्दी में क्या-क्या है?
शब्द पूरे करो।

सिपाही का जीवन कैसा होता है?

क्या कहती है कहानी?

एक सैनिक का जीवन बहुत कठिन होता है। घर-परिवार से दूर, देश की सुरक्षा के लिए जान की बाज़ी लगाते हैं ये सैनिक। पर कभी-कभी इन सैनिकों के अन्दर झाँकने से दिखता है कोई बच्चा, कोई पिता, कोई इंसान ...

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।

इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

युवकथा की अन्य दिलचस्प किताबें!

युवकथा

2

एक सैनिक का जीवन बहुत कठिन होता है। घर-परिवार से दूर, देश की सुरक्षा के लिए जान की बाज़ी लगाते हैं ये सैनिक। पर कभी-कभी इन सैनिकों के अन्दर झाँकने से दिखता है कोई बच्चा, कोई पिता, कोई इंसान ...